International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(III), January - March, 2022, pp.35-41

वर्तमान परिपेक्ष्य में पर्यावरण संकट : चुनौतियां एवं सुझाव

हरि प्रसाद यादव*

प्रस्तावना

पर्यावरण शब्द परि + आवरण शब्दों से मिलकर बना है, इसका चहुँ ओर से जीवधारीयों को प्रभावित करता है। इस प्रकार पर्यावरण जीवों को प्रभावित करने वाले समस्त भौतिक एवं जैविक कारकों का योग होता हैं। यह कहा जा सकता है कि हमारी पृथ्वी का पर्यावरण वह बाहरी शक्ति है, जिसका जीवन पर स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। ये शक्तियाँ परस्पर संबंधित हैं, परिवर्तनशील है तथा सम्पूर्ण एवं संयुक्त रुप से जीवन पर प्रभाव डालती है। इनमें भौतिक कारक के रुप में जल, वायु, मिट्टी, प्रकाश, ताप आदि एवं जैविक रुप में शैवाल, कवक, सूक्ष्मजीव, परजीवी, सहजीवी, विषाणु, जीवाणु, पादप एवं जन्तु आदि सभी पर्यावरण घटक के रुप में है, जिसे हम पर्यावरण कहते है। (गोड 2015 : 1–2)

पर्यावरण का इतिहास

इतिहास निरन्तर चलने वाली वह अनवरत प्रक्रिया है, जिसमें वर्तमान में घटित घटनाएं भूतकाल में पहुँचते ही इतिहास की विषय–वस्तु बन जाती है। इतिहास देश और काल की सीमा में आबद होता है तथा देश एवं काल का एक प्राकृतिक प्रवेश होता है। प्रकृति एवं पर्यावरण के दायरे में सिमट कर ही घटनाएं निरन्तर इतिहास की विषय–वस्तु बनती रहती हैं। यह एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया हैं, जो प्रकृति एवं पर्यावरण से इतर नही होती है। उन्नत, अवनत, उत्थान–पतन, प्रकृति के शाश्वत नियम है जिसमें निहित तथ्य ही इतिहास के निर्माण में सहायक होती है। पृथ्वी पर जीवन की उत्पति एक महत्त्वपूर्ण घटना है।

प्रकृति एवं पर्यावरण ही इसका मुख्य उतरदायी कारक हैं। मानव समस्त प्राणियों में सर्वाधिक बुद्धिजीवी के रुप में स्वीकार किया गया है। बुद्धिमता से उसने अपनी भूतकालीन घटित घटनाओं को पिरोने के लिये इतिहास रुपी वृक्ष को रोपण करने हेतु उत्प्ररित किया हैं किन्तु कालान्तर में इसी बुद्धिमता ने पर्यावरण संबन्धी तत्वों के अतिशय दोहन एवं विदोहन से धराशाही कर दिया जिसका परिणाम वर्तमान समय में पर्यावरणीय समस्याओं के रुप में परिलक्षित होता है। वर्तमान युग में बढती जनसंख्या, उद्योगिकरण, वनों की कटाई, वन्य जीवों का संहार तथा परमाणु परीक्षणों से पर्यावरण सन्तुलन बिगड़ रहा है। इस प्रदूषण प्रसार के लिये मानवजनित कर्म ही उतरदायी है, पर्यावरण की शुद्धि ना केवल सभ्यता एवं संस्कृति की प्रतीक होती है, अपितु हमारे शारीरिक, मानसिक आदि सभी के विकास के लिये आवश्यक है। प्राचीन काल में प्रदूषण की समस्या वर्तमान की भांति विकराल नही थी। पर्यावरण के सन्दर्भ में ऋषियों, मुनियों का चिन्तन व्यवहारिक, वैज्ञानिक और महत्त्वपूर्ण था। धर्म ग्रन्थों के अनुसार पर्यावरण में मानव सभ्यता के प्रारम्भ से ही मानव एवं प्रकृति का अटूट संबन्ध बना रहा है। मानव जन्म से ही प्राकृतिक तत्वों पर निर्भर रहा है जिसके कारण ही मानव ने

* शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान।

प्राकृतिक तत्वों की सुरक्षा को समझा और भारतीय भूमि की बनावट, प्राकृतिक जिसमें वन–उपवन और वनस्पति संपदा का अपार भण्डार है। सभ्यता के प्रारंभिक काल से पशु–पक्षियों, पेड़–पौधे, जंगली घास–फूस, फल–फूल एवं कन्द मूल आदि का भी महत्त्व किसी न किसी रुप में रहा हैं। वेदों–पुराणो, स्मृतियों, महाकाव्यों प्राचीन भारतीय धर्म ग्रन्थों में प्रकृति, जीव–जन्तु, पर्वत, नदी, पहाड़ आदि पक्षों के माध्यम से प्रकुति के संरक्षण को महत्त्व दिया गया है। देवमण्डल में देवी–देवताओ की आराधना के साथ–साथ वनस्पति, जन्तु एवं अनके वाहन इत्यादि को भी देवता के समान माना गया। जिसमें हाथी, गाय, पीपल, नीम, अशोक, तुलसी आदि के प्रति भक्ति–भाव का पर्यावरण संतुलन में योगदान जुड़ा हुआ हैं। ऋगवेद के अनुसार औषधीय वृक्षो के गुणों के बारे में बताया गया और वृक्षों की माता की उपमा से विभूषित किया गया। भारतीय ग्रन्थों में माता को पूजनीय कहा गया है, यह इस प्रकार कहा जा सकता है कि औषधियुक्त वनस्पति अभी पूजनीय है औषधियां विभिन्न रोगो और प्रदूषण को दूर करती है। ऋगवेद में पृथ्वी एवं आकाश के बारे में क्रमशः कहा गया है कि पृथ्वी मेरा भरण–पोषण करती है, वह मेरी माता है और आकाश मेरी रक्षा करता है, वह मेरे पिता तुल्य माना गया है। मनुस्मृति के अनुसार अगर कोई हरे पेड़–पौधों की कटाई करता है तो उसे समाज से बहिष्कृत किया जाता था। वृक्ष की लताओं व उनकी शाखाओं को काटते थे तो उनकों सजा दी जाती थी। (पाल – गुसाई, 2017:107–109)

पर्यावरणीय संकट

आज के समय में पर्यावरण संकट गहराता जा रहा है इसके साथ–साथ पर्यावरण की जो मुश्किल है वह काफी जटिल हद तक गंभीर रुप धारण कर लिया है यह किसी एक की समस्या न हो कर पूरे विश्व की समस्या बन चुकी है। विश्व के प्रभुत्व सम्पन्न देश अपनी भौगोलिक जरुरतों को नजरअंदाज करके, अपनी आर्थिक जरुरतों को पुरा करने में लगे हुए है, जिसके कारण ही पर्यावरण संकट का सामना करना पड़ रहा है। यह कम होने के बजाय दिन–ब– दिन बढती ही जा रही है। किसी देश में तो पर्यावरण आपातकाल तक की नोबत आ चुकी है, देश का शासन चलाने वाली सरकारें इस समस्या से निजात पाने के लिये कुछ प्रयत्न कर रही है, पर वह उसके लिये नाकाम साबित हो रहे हैं, क्योंकि आजकल हर वो देश जो आथिक उन्नति करने में अव्वल नम्बर पर रहना चाहता है, इस अंधी दौड़ में शामिल हो चुका है। अपने आर्थिक लालसाओं को पुरा करने के लिये उनका मानना है कि देश की उन्नति के लिये थोड़ा बहुत नुकसान सहन करना ही पड़ता है। हम अपने वर्तमान परिप्रेक्ष्य को संवारने के चक्कर में अपने भविष्य का अपने ही हाथों गला घोंट रहे हैं। (कुमार, 2020:12–16)

पर्यावरण का संकट गंभीर दौर से गुजर रहा है, उसका परिणाम सभी के ऊपर दिखने लगा हैं। धरती पर होने वाले ऐसे बदलावों के सबसे खतरनाक स्तर से बचना अतिआवश्यक हो गया है, क्योंकि एक सीमा के उपरान्त पृथ्वी पर विविधता पूर्ण जीवन में आने वाली स्थितियाँ सदैव परिर्वतन कर सकती है। पृथ्वी और उसके जीवन की व्यवस्था जिस तरह से हो रही है उसमें एक व्यापक बदलाव की जरुरत है, अन्यथा बहुत दुःख दर्द बढेंगे, जिसके कारण पृथ्वी इतनी तहस–नहस हो जायेगी कि उसे बचाया नही जा सकेगा। मनुष्य के अनेक तौर–तरीकें उनके भविष्य में सुरक्षित जीवन की अनेक संभावनाओं का नष्ट कर रहे है, और उसे लगातार इतना बदल दिया है कि जिस रुप में जीवन को हमें जीना है उसका अस्तित्व ही कहीं भविष्य में नामुमकिन ना हो जाये। वैश्वीकरण जीवन की वास्तविकता है, चाहें हम इसे स्वीकार करें या ना करें मानव पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव होता ही है। समाज की वास्तविकता को जानने के लिये वैश्वीकरण एक महत्त्वपूर्ण कारक बन गया है, जिसमें पर्यावरण और समाज समाजशास्त्रीयों एवं मानवशास्त्रीयों के अन्तर संबन्धों को जानने का प्रयास किया गया है। इसमें पर्यावरण की पारिस्थितिकीय, सामाजिकीय तथा आर्थिक दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला गया है जिसमें विकसित तथा विकासशील देशों का बदलते पर्यावरण पर ध्यान आकर्षित किया गया है। (वर्मा,2015:139)

वैश्वीकरण की उत्पति आधुनिक युग में विकास एवं सम्पर्कशीलता के एक परिणाम के रुप में द्वित्तीय युद्ध समाप्ति के पश्चात् हुई। उपभोक्ता वैश्वीकरण की अवधारणा के साथ जुड़ा हुआ है, अर्थसम्पूर्ण विश्व को एक अर्थव्यवस्था निभाती है। एक दृश्य के अनुसार उपभोक्तावाद एक वरदान है, क्योंकि लोकसंस्कृति में भौतिक सुख–सुविधाओं की ओर आकर्षित होता जा रहा है, जिसमें उपभोक्तावाद लाभ की प्रवृति को देखता है और

इसलिये शोषणकारी और दमनकारी मानव है। वर्तमान पर्यावरणीय परिपेक्ष्य में अनन्त प्रकार के संसाधनों एवं उत्पादों का उपयोग किया जा रहा है, जो विलासिता की वस्तुओं एवं तकनीकि नवाचारों को शामिल करने के लिये मूलभूत आवश्यकताओं की सीमा से बाहर निकल चुके है। (आहूजा, 2019:286)

मानव निर्मित प्रकृति से तबाही एवं भयावहता को रोकने के लिए आज वर्तमान समय के जीवन के तौर–तरीके में एवं जीवन शैली में परिवर्तन की आवश्यकता और ध्यान देने की जरुरत है। जिसमें पृथ्वी को हरा–भरा रखना और प्रदूषण मुक्त भी करना होगा। (शर्मा,2020:19–20द्ध

पर्यावरण पर प्रभाव

लोगों का विश्वास है कि वैश्वीकरण उन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारकों में से, जिनके द्वारा अवनयन में वृद्धि हो गयी है। उद्योगों एवं कारखानों को चलाने के लिये आवश्यक कच्चे माल की मात्रा का पृथ्वी ग्रह के प्राकृतिक भण्डारों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। प्रदूषण में हवा की गुणवत्ता को गंभीर रुप से प्रभावित किया है, जो हमारे भविष्य जीवन को बचाये रखने के लिये अति आवश्यक है। (आहूजा, 2019:283)

नगरों की ओर उत्प्रवास से नगरों में अनेक समस्याएं पैदा हो रही हैं, जिसमें नगरों के अन्दर गंदी–बस्तियों और झुग्गी–झोंपड़ियों में वृद्धि, आवास की समस्या, असीमित जनसंख्या के घनत्व में वृद्धि, पानी की कमी, नगरीय गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, बाल अपराध, सामाजिक अपराध जैसी गंभीर समस्याएं दिन–प्रतिदिन बढ रही हैं। इसके अतिरिक्त ग्रामीण परिवेश में भी पर्यावरण प्रदूषण जिसमें वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूष्ण आदि में वृद्धि हुई है। आज भी ग्रामीण परिवेश में लकड़ी का ईंधन काम में लेते है, जिससे पर्यावरण प्रदूषण फैलता है जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। (शर्मा,2015:175)

पर्यावरण प्रदूषण एक समस्या

पर्यावरण प्रदूषण आज विश्व की सर्वाधिक ज्वलन्त समस्या है जिसकी चपेट में विश्व का प्रत्येक देश आता जा रहा है। भारत में भी यह समस्या प्रतिदिन गंभीर होती जा रही है। औद्योगिक एवं तकनीकी प्रगति, रसायनों के उपयोग में वृद्धि, जनसंख्या वृद्धि एवं नगरीयकरण आदि के कारण वर्तमान में पर्यावरण दूषित होता जा रहा हैं। इसके फलस्वरुप मानव अनेक मानसिक और शारीरिक गंभीर बिमारियों से ग्रसित होता जा रहा है। पर्यावरण प्रदूषण मात्र वर्तमान की समस्या ही नही है अपितु भविष्य में और भी हानिकारक परिणाम होगें। अब इस समस्या के वर्तमान स्वरुप को न केवल समझना होगा अपितु इसके लिये इस प्रकार के प्रयत्न करने होगें जिससे इसे नियन्त्रित कर सके, और भविष्य पर इसका कुप्रभाव ना पड़े। सामान्यतः पर्यावरण प्रदूषण से तात्पर्य है कि प्राकृतिक जलवायु जमीन का क्रमिक रुप से दूषित होते जाना। प्रकुति प्रदत्त ये तत्व जब दूषित होने लगते है तो न केवल मावन अपितु सम्पूर्ण जीव–जगत के लिये संकट उत्पन्न हो जाता है। प्रदूषण का जहर कहीं अप्रत्यक्ष तो कहीं स्पष्ट रुप से हमारे चारों और नजर आ रहा है। सामान्य रुप से प्रदूषण के निम्न प्रकार वर्णित हैः–

- **जल प्रदूषणः**– जल ही जीवन है, अर्थात जल सम्पूर्ण जीव–जगत का आधार है, जो न केवल मानवजाति बल्कि जीव–जन्तु वनस्पति आदि का भी जीवन स्रोत्र है। शुद्ध जल जहां मानवता को स्वस्थ रखता है एवं प्रदूषित जल अनेक बीमारियों को पैदा करता है, जल का स्रोत्र भूमिगत एकत्रित जल, नदियों, तालाब, झील, समुद्र आदि हैं।

जल हाईड्रोजन एवं ऑक्सीजन का यौगिक है, किन्तु शुद्ध जल कहीं नहीं मिलता है। इसमें वायु मण्डलीय अशुद्धियां जैसे– धूल के कण, गैस आदि मिश्रित होते हैं अथवा अनेक रसायन एवं खनिज तत्व जिसमें कैल्श्यिम, मैग्निशियम, क्लोराइड, लौहा, जिंक, पारा, सल्फेट आदि मिश्रित होते हैं। इनकी सीमित या निर्धारित मात्रा हानिकारक नही होती है, अधिकता मानव को ही नही, वनस्पति एवं अन्य पादपों को भी हानि पंहुचाती हैं। वर्तमान समय में जल के उपयोग में निरन्तर वृद्धि हो रही है। एक और घरेलू उपयोग में जल प्रयोग अधिक करने की प्रवृति हो रही है, तो दूसरी और गंदे जल का निस्तारण किया जा रहा है। उद्योगों से प्रदूषित जल बाहर भूमि पर नदी के जल में, तालाबों, झीलों में डाल दिया जाता हैं।

जल प्रदूषण के कारण :–

- घरेलू गंदगी का जल
- वाहित मल
- औद्योगिक बहिःस्त्राव
- कृषि बहिःस्त्राव
- रेडियोधर्मी अपशिष्ट
- तापीय प्रदूषण

गंदे जल, मल निस्तारण की उचित व्यवस्था न होने से यह नदी, तालाब, नालों, झीलों में पहुँच जाता है, जिससे उनका जल प्रदूषित हो जाता है। यही नहीं जलाशयों एवं नदियों में कपड़ों का धोना, नहाना, पशुओं की सफाई करना, मल को बहा देना एक आम आदत है, डिटर्जेन्ट के उपयोग में वृद्धि से, उद्योगों से निकले जल में अनेक विषैले पदार्थ होते हैं इन सभी कारणों से जल प्रदूषण होता है। इससे जल में रहने वाले जीवों का जीवन भी खतरे में है तथा दूषित जल के सेवन से मानव में भी अनेक शारीरिक विकार पैदा हो जाते हैं।

- **वायु प्रदूषण :–** वायु पृथ्वी पर जीवन का आधार है, इसी से सभी प्राणियों एवं जीव–जन्तुओं को ऑक्सीजन एवं वनस्पति को कार्बनडाई–ऑक्साईड मिलती है, जिससे उनका पोषण होता है। वायु एक विशेष तत्व नही, अपितु अनेक गैसों का मिश्रण हैं, जिसमें नाईट्रोजन 78ः, ऑक्सीजन 21ः वतावरण में पाई जाती हैं। वायु प्रदूषण उसी समय प्रारम्भ होता है जब वायु में अंवाछित तत्व समाविष्ट होते हैं, जिससे उसका प्राकृतिक स्वरुप नष्ट हो जाता है। वायु में अनेक गैसे, ठोस एवं तरल कण, कार्बनिक एवं अकार्बनिक, प्राकृतिक एवं मानवीय कारणों से वायु प्रदूषण अधिक फैलता है। वायु प्रदूषण के प्राकृतिक कारणों में ज्वालामुखी विस्फोट एवं उससे निकलने वाला लावा, मलबा एवं विभिन्न प्रकार की गैसे प्रमुख हैं। वर्तमान में पर्यावरण में मानवीय कृत्रिमताओं से वायु प्रदूषण अधिक होता जा रहा है जो कि एक वैश्विक स्तर की चुनौती बन गई है।

वायु प्रदूषण के कारण है ः–

- दहन द्वारा
  - घरेलू कार्यों में दहन
  - वाहनों में दहन
  - ताप विद्युत ऊर्जा में दहन
- उद्योगों द्वारा वायु प्रदूषण
- कृषि में कीटनाश्कों एवं अन्य रसायनों द्वारा फैलाया गया वायु प्रदूषण

वायु प्रदूषण वाहनों द्वारा छोड़े जाने वाले धुँए और उद्योगों से निकलने वाली जहरीली गैंसों से होता हैं, जिसमें हाईड्रोजन, नाइट्रोजन, सल्फर के विभिन्न ऑक्साइड तथा कार्बन मोनोऑक्साइड और शीशे के कण भी होते हैं जिससे वायु प्रदूषण होता है। जैसे–जैसे वाहनों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है, वैसे–वैसे वायु प्रदूषण की अधिकता होती जा रही है। नगरों में वायु प्रदूषण अधिक होता जा रहा है और क्षेत्रों में भी इसका प्रकोप फैलाव बढ रहा है। गाँवों में भोजन पकाने के लिये गोबर के कण्डे तथा लकड़ियों का उपयोग किया जाता है, जिससे अत्यधिक धुँआ होता है जो वायु प्रदूषण का कारक है। खेतों में अवशिष्ट पदार्थों को जलाना, कुम्हार द्वारा मिट्टी के बर्तन पकाने के लिये अलाव जलाना, ईटों के भट्टे से निकला धुँआ भी वायु प्रदूषण फैलाता है। खनिज खनन के क्षेत्रों में खानों से निकले रेत के कण भी वायु प्रदूषण को जन्म देते है। वायु प्रदूषण का सर्वाधिक हानिकारक प्रभाव मानव के श्वसन तंत्र पर पड़ता है, इससे ब्रोंकाइटिस, गले का दर्द, निमोनिया, फेफड़े का केंसर, तथा ह्रदय रोग आदि होते हैं। वाहनों के धुऐं में मिश्रित सल्फरडाइऑक्साइड,

नाइट्रोजनडाइऑक्साइड, और शीशा श्वास रोगों के अतिरिक्त यकृत, आहारनाल, मस्तिष्क रोग, हड्डियों का गलना आदि बिमारियों का कारण है। इससे पशु–पक्षियों व वनस्पतियों पर भी प्रभाव पड़ता है।

- **ध्वनि प्रदूषण :–** ध्वनि की तीव्रता जब मानव के लिये असहनीय हो जाती है तो वह ध्वनि प्रदूषण बन जाता है जैसे– बिजली का कड़कना, शेर का दहाड़ना, यातायात वाहनों का तेज हॉर्न, तेज वाद्ययन्त्र का बजना आदि ध्वनि प्रदूषण के प्रकार हैं। कभी–कभी किसी को तेज शोर भी सुखद लगता है, तो दूसरे को मध्यम ध्वनि भी शोर लगती है। ध्वनि का मापन डेसीबल में किया जाता है। वार्तालाप की ध्वनि 60 डेसीबल आंकी गई है। मोटर वाहनों की ध्वनि 110 से 130 डेसीबल आंकी गई है, जो की पीड़ादायक होती है। जबकि 150 से अधिक की ध्वनि हमारे लिये असहनीय हो जाती है। ज्यादातर देशों में 75 से 80 डेसीबल ध्वनि को सामान्य सीमा माना गया है। प्रमुख नगरों में दिन के समय में वाहनों के शोर की समस्या गंभीर बनती जा रही है। इस प्रकार कारखानों में तथा मशीनों एवं खानों में विस्फोट तथा तोड़फोड़ का शोर भी अधिक होता जा रहा हैं। राष्ट्रीय राजमार्गों तथा अन्य प्रमुख राजमार्गों पर ध्वनि प्रदूषण अधिक होता जा रहा है। अन्य सभी क्षेत्रों में रेडियो, लाउडस्पीकर, टेलीविजन व वाद्यन्त्रों का शोर आम होता जा रहा है। अधिक ध्वनि प्रदूषण से न केवल बहरेपन में वृद्वि होती है अपितु सामान्य स्वास्थ्य की भी हानि होती है। इस प्रकार ध्वनि प्रदूषण भी हमारे पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।
- **भू–प्रदूषण** :– जब प्राकृतिक अथवा मानवीय कार्यों से भूमि का प्राकृतिक स्वरुप नष्ट होने लगता है, तब वहीं से भूमि प्रदूषण प्रारंभ हो जाता है। भू–प्रदूषण से तात्पर्य है– ''भूमि के भौतिक रासायनिक या जैविक गुणों में ऐसा कोई अंवाछित परिवर्तन जिसका प्रभाव मनुष्य एवं अन्य जीवों पर पड़े या भूमि की प्राकुतिक गुणवत्ता को नष्ट करता है तो वह भू–प्रदूषण कहलाता है। प्राकृतिक रुप से भूमि का कटाव, पानी के वेग से नदियो के किनारों का कटाव होकर विस्तृत होना, भूमि का अम्ल व क्षारीय, लवणीयता होना भूमि प्रदूषण के अन्तर्गत आता है। वर्तमान में ठोस एवं तरल कूड़ा–कचरा प्रदूषण बढता जा रहा है। जनसंख्या वृद्धि, नगरीयकरण, औद्योगिकरण एवं मानव की मूलभूत आवश्यकताओं में अत्यधिक वद्धि होती जा रही हैं, एवं उच्च जीवन स्तर की लालसा में वद्धि के कारण पदार्थों को बाहर फेंक देते हैं। घरों से प्रतिदिन सफाई करके धूल–मिट्टी, कागज, प्लास्टिक, धातु, कांच के टुकड़े, सब्जी और फल के छिलके, अनुपयुक्त रसायन आदि को घरों से बाहर अथवा सड़कों पर डाल दिया जाता है, इनका उचित निस्तारण नही होने से भूमि प्रदूषण फैल रहा हैं। प्लास्टिक की थैलियों के उपयोग से इस समस्या को और अधिक गंभीर बनता जा रहा है। नगरो में एकत्रित गंदगी का कई स्थानों पर ढेर लगा होना, यह सभी नगरो की मूल समस्या है। यह मलबा, गंदगी, कचरा भू–प्रदूषण के साथ–साथ स्वास्थ्य के लिये भी हानिकारक है। सभी भूमि खनिज खदानों से निकले अवशिष्ट पदार्थ का अंबार लगा रहता है। बजरी खनन आज पर्यावरण के लिये समस्या बनता जा रहा है, मानवीय कारणों के साथ–साथ प्राकृतिक कारणों से भी भूमि प्रदूषण हो रहा है, जिसमें चंबल नदी के किनारों पर कटाव से बीहड़ क्षेत्र का विस्तार बढता जा रहा है, वर्षा के समय नदी–नालों द्वारा मृदा क्षरण से भी भूमि का कटाव होता है। मूसलाधार वर्षा से स्थिति भयानक हो जाती है जैसे– कुछ–कुछ स्थानों पर भूमि का जमीन स्तर के लेवल से जमीन का नीचे बैठ जाना, यह क्रम वर्षाकाल में प्रतिवर्ष देखा जा सकता है। भू–प्रदूषण से भूमि की प्रकृति भी परिवर्तित होती है, जिसमें भूमि का उबड़–खाबड़ हो जाना, इससे जल एवं वायु प्रदूषण भी होता है। भू–प्रदूषण से भूमि की उर्वरता/उपयोगिता भी नष्ट होती है और बंजर भूमि का विस्तार बढता जा रहा है। शहरो एवं नगरो में जनसंख्या वद्धि अधिक होने से आवास के लिये पहाड़, तालाब, नदियों के किनारे, चारागाह पर अतिक्रमण करके प्राकृतिक भूमि को नष्ट करके भू–प्रदूषण को बढाया जा रहा है। भू–प्रदूषण अनेक बीमारियों को निमन्त्रण देता है जिसमें टीबी, मलेरिया, आँखों के रोग, आंन्त्रशोध आदि अनेक बीमारियों से मानव जीवन संकट ग्रस्त होता जा रहा हैं। (सक्सेना, 2018:296–310)

पर्यावरण प्रदूषण रोकने हेतु सुझाव

- अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना चाहिए जिसमें ज्यादा पत्तियों वाले पौधों को लगाना चाहिये तथा औषधीय पौधों को लगाना चाहिये।
- सामाजिक वानिकी योजना पंचायत स्तर पर लागू करनी चाहिये।
- स्थानीय पर्यावरण के अनुरुप वनस्पति को लगाना चाहिये।
- वर्षा जल को एकत्र कर उपयोग में लिया जाये।
- बंजर भूमि को वृक्षारोपण करने हेतु तैयार किया जाना चाहिये।
- खनिज खनन क्षेत्रों में निकले खदान या मलबे का उचित निस्तारण की व्यवस्था की जाये।
- पड़त भूमि को कृषि योग्य बनाये जाने हेतु प्रयास करने चाहिये।
- पर्यावरण को शुद्व रखने के लिये जल, वायु, ध्वनि एवं भूमि प्रदूषण को नियन्त्रण के लिये जागरुकता कार्यक्रम चलाना चाहिये। और उनका नियमित मूल्यांकन भी करना चाहिए।
- जल स्रोत्रों को शुद्व एवं स्वच्छ रखने हेतु प्रयास किये जाने चाहिये तथा लोगों में जागरुकता फैलानी चाहिये।
- पर्यावरण शिक्षा प्राथमिक स्तर से बालकों को प्रदान की जानी चाहिये।
- जीव–जंन्तुओं को विलुप्त होने से अधिक से अधिक वन्य जीव अभ्यारण्य बनाकर बचाया जाना चाहिये।
- वनों की अंधाधुंध कटाई पर लोगों को जागरुक कर उन पर नियन्त्रण करना चाहिए।
- नगरीकरण स्तर पर अपशिष्ट पदार्थों का निस्तारण या भस्मीकरण, रसायन क्रिया द्वारा समाप्त करना चाहिए।
- ध्वनि प्रदूषण को रोकने के लिये तेज और प्रेशर हॉर्न पर नियन्त्रण लगाना चाहिए।
- वायु प्रदूषण नियन्त्रण हेतु वाहनों द्वारा, कलकारखानों, उद्योगों से निकलते धुँए को नियन्त्रण के लिये नये नियम–कानून की आवश्यकता है।
- पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिये पशु–पक्षियों व वन्य–जीवों, पेड़–पौधें पारिस्थितिकीय घटकों को बचाना चाहिए।
- जनसंख्या पर नियन्त्रण हेतु व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास एवं सामाजिक जागरुकता की आवश्यकता है।
- वर्तमान में मानव जीवन शैली में बदलाव की आवश्यकता है, जिससे प्रकृति बच सके। पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाले तौर–तरीकों में सुधार किया जाये।
- वैश्विक स्तर पर नये नियम, पर्यावरण शिक्षा, नये पर्यावरण अनुसंधान, नये आयाम पर्यावरण में शामिल करने की जरुरत है।
- खाद के रुप जैसे– गोबर, पत्तियों की खाद व जैविक खाद के प्रयोग को प्रोत्साहित करें व रासायनिक खाद का प्रयोग कम से कम मात्रा में हो।
- शहरी कचरे को यन्त्रों द्वारा एकत्र करके कचरे को विद्युत उत्पादन एवं खाद उत्पादन काम में लिया जाना चाहिए।
- औद्योगिक प्रतिष्ठानों हेतु स्पष्ट नियम बनाए जाए जिससे वे कारखानों से निकले अपशिष्टों को बिना संशोधित किये नदियों, झीलों, ताालाबों में विसर्जित न करें।
- नगरपालिकाओं के लिये सीवर शोधन संयन्त्रों की व्यवस्था होनी चाहिए तथा सरकार को प्रदूषण नियन्त्रण की योजनाओं के सफलतापूर्वक क्रियान्वयन के लिये आवश्यक धन मुहैया करवाया जाये।

- प्राणघातक प्रदूषण फैलाने वाले वाले पुराने उद्योगों के स्थान पर वर्तमान में परिमार्जित कम धुआँ देने वाले उद्योगों की स्थापना पर जोर दिया जाये, क्योंकि कलकारखानों के धुएं से निकलने वाली कार्बनडाईऑक्साइड व क्लोरोफ्लोरो गैसों से पृथ्वी का रक्षा कवच ओजोन परत जो सूर्य से आने वाली पैराबैंगनी किरणों से हमारी रक्षा करती है का क्षरण होता है।
- डीजल से चलने वाले वाहनों में सल्फर युक्त डीजल (ब्छळ) या हरित डीजल का प्रयोग करना होगा।
- सरकार द्वारा प्लास्टिक बैग के प्रचलन को बन्द करवाकर, लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता फैलाकर कपड़े व कागज के थैले का प्रयोग करने को प्रोत्साहित किया जाय।

निष्कर्ष

पर्यावरणीय समस्या एक वैश्विक स्तर की गंभीर समस्या बन गई है जिसमें वायु प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, जल प्रदूषण व ध्वनि प्रदूषण के रुप में परिलक्षित है। उपभोक्तावाद की संस्कृति से पर्यावरण को भारी क्षति पहुँची है, वृक्षों, वनों, पहाड़ों की कटाई, भूमि का अत्यधिक कटाव, यातायात वाहनों, कल–कारखानों से निकलता जहरीला धूँआ व परमाणु आदि से पृथ्वी के औसत तापमान में प्रतिवर्ष बढोतरी देखी जा रही है, जिसे ''ग्लोबल वार्मिंग'' कहते है। पर्यावरण प्रदूषण से वर्तमान समय में आँधी, तूफान, चक्रवात, रासायनिक वर्षा आदि का भी देखा जा रहा है। पृथ्वी के तापमान में बढोतरी से हिम ग्लेशियर पिघल रहे हैं, इनके पिघलने से समुद्री जल में बढोतरी हो रही है इसके कारण समुद्र के किनारे बसे गाँव, शहर डुबने के कगाार पर हैं। अत्यधिक जनसंख्या वृद्वि के कारण भी पृथ्वी का अतिदोहन हो रहा है। उपरोक्त पर्यावरणीय प्रदूषण की परेशानियों से बचने का किसी एक देश का नही है वरन विश्व के समस्त देश, वैज्ञानिक को मिलकर इस गंभीर पर्यावरणीय संकट का स्थाई समाधान खोजना होगा, यदि शीघ्र ऐसा नही किया गया तो आने वाले वर्षों में मानव जीवन खतरे में पड़ जायेगा। वैसे संयुक्त राष्ट्र के दिशा–निर्देश में समय–समय पर सभी देशों को पर्यावरण संरक्षण की सुरक्षा के बारे में जागरुक किया जा रहा है। इस शोध पत्र में पर्यावरण प्रदूषण के प्रकारों के साथ–साथ चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला गया है। पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिये आमजन में जागरुकता एवं पर्यावरण सुरक्षा के प्रति जिम्मेदारीपूर्ण रवैया रखने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वर्मा, मनीष के (2015), ''भारतीय समाज शास्त्र की समीक्षा'' : दिल्ली, आर, इंदिरा.(पेज 139–40)
2. आहूजा, राम (2019), ''सामाजिक समस्याए'' : जयपुर, रावत पब्लिकेशन, (पेज 286)
3. शर्मा, मृत्युंजय (2021), ''अखण्ड ज्योति'' : मथुरा, जनजागरण प्रेस, (पेज 19–20)
4. आहुजा, राम (2019), ''सामाजिक समस्याएं'' : जयपुर, रावत पब्लिकेशन, (पेज 283)
5. शर्मा, वीरेन्द्र प्रकाश, (2015), ''ग्रामीण एवं नगरीय समाजशास्त्र'' : जयपुर, पंचशील प्रकाशन (पेज175)
6. गौड, ममता (2015), ''पर्यावरण एवं भारत में विधिक प्रावधान'' International of Reacherch - GRANTHAALAH 3¼9SE½%1&2 DOL:10-2921@granthaalayah.v3.i9SE.2015.3235.
7. पाल, विजय कुमार – गुसाई,एम.एस. (2017), ''प्राचीन भारतीय धर्म ग्रन्थों में पर्यावरण चेतना एक एतिहासिक अध्ययन'' International journal of communities and Social Science Research, ISSN:2455-2070,Impect Factor : RJIF 5.22
8. कुमार, अरबिन्द (2020), ''पर्यावरण संकट और विश्व'' International journal of Humanities and Social Science Research, Volume 6, page 12-16.
9. सक्सेना, हरि मोहन (2018), ''राजस्थान का भूगोल'' : जयपुर , राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (पेज 296 से 310)

❖◆❖